सूर्य अष्टम पाठ जीवन की बाधाओं को हरने वाला

सूर्य अष्टकम का पाठ करने से व्यक्ति के जीवन में नवजीवन का संचार होता है। इस धरा धाम में श्री सूर्य देव जी ही एक ऐसे देव हैं, जिनका दर्शन हम सभी को प्रतिदिन होता है। ज्योतिष के नवग्रह मंडल में सूर्य देव का स्थान सर्वोपरि है, सूर्य देव की नियमित साधना जीवन में चमत्कारिक रूप से लाभ पहुंचती है, जिन युवाओं को सरकारी नौकरी चाहिए या सरकार से संबंधित कार्य करने पड़ते हैं, ऐसे लोगों को नियमित रूप से सूर्य अष्टम का पाठ करना चाहिए।

अनिल सुधांशु
ज्योतिषाचार्य

सूर्य अष्टकम पढ़ने के लाभ

श्री सूर्य अष्टकम के पाठ से व्यक्ति के जीवन में चमत्कारिक परिवर्तन देखने को मिलता है, लेकिन हम यहां पर आप सभी को बता दें कि किसी भी देवी-देवता की पूजा आराधना करने से व्यक्ति के जीवन में बदलाव या मनोवांछित लाभ तभी मिल पाता है, जब पूजा आराधना पूर्ण श्रद्धा व सच्चे मन से की जाती है।

ग्रह बाधा से मुक्ति

ज्योतिष विद्या में श्री सूर्य देव जी को नवग्रह मंडल का प्रमुख माना गया है। श्री सूर्य अष्टकम का पाठ करने से सभी प्रकार की नौ ग्रह शांत होते हैं। शनि दोष राहु-केतु सभी का दोष दूर होते हैं। जिस साधक की कुंडली में या उनकी राशि में किसी भी प्रकार का ग्रह दोष उत्पन्न होता है, तो उन्हें श्री सूर्य अष्टकम का पाठ निश्चय ही करनी चाहिए।

रोगों से मुक्ति

श्री सूर्य अष्टकम के पाठ से असाध्य रोगों में भी आशातीत लाभ मिलता है। जब कोई व्यक्ति किसी गंभीर बीमारी या दुर्घटना का शिकार हो गया हो, तो, उन्हें या उनके परिजन को उनके लिए सूर्य अष्टकम का पाठ अवश्य ही करनी चाहिए। इससे उस तकलीफ में उसे शीघ्र लाभ मिलता है और शीघ्र ही स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करता है।

सुख समृद्धि की प्राप्ति

श्री सूर्य अष्टकम के नियमित पाठ से घर परिवार एवं जीवन में सुख समृद्धि आती है। जीवन खुशियों से भर जाती है। इसके पाठ से व्यक्ति को उनके जीवन में सफलता मिलती है। उनका हर कार्य सफल होता है। जहां सफलता है, वहां खुशियां आती है।

दूर होती है बेरोजगारी

ऐसे व्यक्ति जो बेरोजगार हैं या जिनके पास आय का कोई साधन नहीं हैं, उन्हें श्री सूर्य अष्टकम का पाठ अवश्य ही करनी चाहिए। इसके नियमित पाठ से शीघ्र ही नौकरी या व्यवसाय का मार्ग प्रशस्त होता है। व्यक्ति को योग्यता अनुसार मनचाही नौकरी की प्राप्ति होती है। अगर कोई व्यापार या किसी व्यवसाय के क्षेत्र में है, तो उन्हें अपने कार्य में सफलता मिलती है।

प्रतिद्वंद्वियों से आगे होना

आज का युग कंपटीशन एवं चुनौतियों से भरा पड़ा है। आप किसी भी कार्य क्षेत्र में रहे सभी कार्यों में चुनौतियां और कंपटीशन बहुत ज्यादा है। श्री सूर्य अष्टकम के पाठ से व्यक्ति मानसिक रूप से प्रबल रहता है। उनका हौसला बढ़ा हुआ रहता है। वह किसी भी कार्य को पूरे जोश उत्साह के साथ करता है। उनमें इतना जोश उत्साह रहता है कि वह चुनौतियों का सामना करने से कभी घबराता नहीं है। कभी हारता नहीं है, कभी थकता नहीं है, फल स्वरूप वह अपने प्रतिद्वंद्वियों से सदा आगे रहता है।

मानसिक शांति

श्री सूर्य अष्टकम के पाठ से व्यक्ति के सभी कार्य सफल होते हैं। जीवन में खुशियां आती हैं। ग्रह बाधा से मुक्ति मिलती है। बीमारियों से छुटकारा मिलता है। बेरोजगारी दूर होती है। इन सब कारणों से व्यक्ति का जीवन खुशियों से भरा रहता है, फलस्वरूप मानसिक शांति की प्राप्ति होती है।

पूर्ण होती हैं मनोकामनाएं

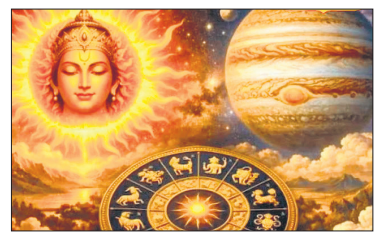

श्री सूर्य अष्टकम का पाठ मनुष्य जिस उद्देश्य से या जिस कामना की पूर्ति के लिए करता है वह निश्चय ही पूरा होता है। इसका पाठ पूर्ण विश्वास व श्रद्धा भक्ति के साथ करने से सारी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। सारी मनोकामनाएं से तात्पर्य यह है कि वह मनोकामनाएं, जो आपके अनुकूल है या उस कामना के लिए आप योग्य हैं। अगर आप में लगन है उस काम के प्रति आप में समर्पण का भाव है, तो सूर्य अष्टकम का पाठ करने से आपके मार्ग में आ रही परेशानियां और अड़चनें दूर होगी और आपकी मनोकामनाएं पूरी होगी।

सूर्य अष्टक पढ़ने की विधि

प्रात: काल सूर्य उदय होते समय लकड़ी की चौकी पर लाल रंग का कपड़ा बिछाकर उसके ऊपर सिर्फ सूर्य यंत्र रखें, यंत्र पर लाल चंदन, कुमकुम, केसर का तिलक लगाए, यदि संभव हो सके तो, रविवार का व्रत रखें, यदि व्रत नहीं रह सकते तो, रविवार के दिन नमक न खाएं। सूर्यदेव कैरियर और व्यापार से संबंधित रुकावटों को दूर करते हैं। रोजी, रोजगार व्यापार की चाह रखने वाले अगर प्रति रविवार उनका दूध-भात-मिश्री का भोग लगा कर पूजन करें, तो 7 रविवार के बीच में ही सरकारी नौकरी लगने की संभावना होती है, सूर्य देव की कृपा से बहुत अच्छा चलता है। सूर्य देव मनुष्य की सभी कामनाओं को पूर्ण करने वाले देवताओं हैं, लेकिन पूरे मन चित्त से पूजन करना अनिवार्य है।

उस महान यात्रा की तैयारी अभी से की जाए

हमें एक दिन मृत्यु की गोद में जाना ही है। जीवन का उद्देश्य है कि हम ईश्वर का साक्षात्कार करें, परमपद को पाएं। किंतु कितने लोग हैं, जो इस ओर ध्यान देते हैं? किसी को तृष्णा से छुटकारा नहीं। कोई इन्द्रिय भोगों में मस्त है। कोई अहंकार में ऐंठा जा रहा है, तो कोई भ्रम जंजाल में ही मस्त है। इन विडंबनाओं को उलझाते-सुलझाते यह सुनहरा अवसर निकलता जा रहा है। मृत्यु सिर के ऊपर नाच रही है। पल का भरोसा नहीं। न जाने किस घड़ी मौत गला दबा दे। आज आप जाने क्या-क्या योजनाएं बना रहे हो, हो सकता है कल यह सब धरे के धरे रह जाएं और हमारा डेरा किसी दूसरे देश ही जा गड़े। ऐसी विषम बेला में अचेत रहना बड़े दुर्भाग्य की बात है। अभी भी समय है।

डॉ. प्रदीप द्विवेदी 'रमण'
आध्यात्मिक लेखक

आंखें खोलिए। सचेत हो जाइए। जीवन क्या है, हम क्या हैं, संसार क्या है, हमारा उद्देश्य क्या है? इन प्रश्नों को उतना ही महत्वपूर्ण समझिए, जितना कि रोटी को समझते हैं। निरंतर इन प्रश्नों पर विचार करने से आप उस मार्ग पर चल पड़ेंगें, जिसे मृत्यु की तैयारी कहते हैं, जो काम कल करना है, उसका बंधन आज से सोचना होगा। आपकी मृत्यु का समय आपको नहीं पता, इसलिए उसकी तैयारी आज से, इसी क्षण से आरंभ करनी चाहिए।

अनासक्ति कर्मयोग के तत्वज्ञान को समझकर जीना उत्तम है। माया के बंधन हमें इसलिए बांध देते हैं कि हम उनमें लिपट जाते हैं। तन्मय हो जाते हैं। स्त्री, पुत्र, कुटुंब, परिवार का बड़े प्रेमपूर्वक पालन कीजिए, उन्हें अपनी संपत्ति नहीं, पूजा का आधार बनाइए। उन्हें अपनी जायदाद न मानना। नहीं तो बुरी तरह मारे जाओगे। बड़ा भारी धोखा खाओगे। संपत्ति उपार्जन अवश्य कीजिए, पर किसी सही उद्देश्य से। न कि शहद की मक्खियों की तरह कष्ट सहने के लिए। सब काम उसी प्रकार कीजिए जैसा संसारी लोग करते हैं, पर अपना दृष्टिकोण दूसरा रखिए। स्मरण रखिए संसार की वस्तुएं आपकी वस्तु नहीं है। दूसरी आत्माएं आपकी गुलाम नहीं हैं।

मेरा-तेरा दोनों एक साथ नहीं रह सकते। बस, माया की सारी गांठ इतनी ही है। योग का सारा ज्ञान इसी गांठ को सुलझाने के लिए है। पाप कर्म हम इसलिए करते हैं कि हमारा अहंभाव बहुत ही संकुचित होता है। जब आप कहते हैं कि मेरी जायदाद इतनी है, तो प्रकृति गाल पर

तमाचा मारती है कि मूर्ख! तू कुछ ही समय से आकर इस पर अधिकार जमाता है, यह प्रवाह अनादिकाल से चला आ रहा है। सोना-चांदी तेरा नहीं है प्रकृति का है, जिसे तू स्त्री समझता है, यह पूर्व जन्मों में तुम्हारी मां हो चुकी होगी। आत्माएं स्वतंत्र हैं, कोई किसी का गुलाम नहीं है। विश्व का कण-कण बड़ी ही द्रुतगति से नाच रहा है। कोई वस्तु स्थिर नहीं है। बहती हुई नदी का आनंद देखना है, तो देख, रोकने खड़ा होगा, तो एक ओर हटा दिया जाएगा।

दुख, विपत्ति, व्यथा और पीड़ा का कारण अज्ञान है। मृत्यु के समय दुख प्राप्त करने का, नरक की ज्वाला में जलने का, भूत-प्रेतों में भटकने का, जन्म-मरण की फांसी में लटकने का एक ही कारण है- अज्ञान, केवल अज्ञान। अंधकार से प्रकाश की ओर चलिए। मृत्यु से अमृत की ओर चलिए। मजहबी कर्मकांड आत्मा का हित नहीं कर सकते। दूसरों की ओर मत ताकिए कि कोई हमें पार कर देगा। केवल पूर्णगुरु की आपको पार कर सकता है। उनके मार्गदर्शन में अपने हृदय को विशाल, उदार, उच्च और महान बनाइए। अहंभाव को हटाकर सबको आत्मदृष्टि से देखिए। अपनी अंतरात्मा को प्रेम में सराबोर कर लीजिए और प्रेम का अमृत समस्त संसार पर बिना भेदभाव के छिड़किए। अपना कर्तव्य धर्मनिष्ठापूर्वक पालन कीजिए। व्यवहार कर्मों में रत्ती भर भी शिथिलता मत आने दीजिए, पर रहिए कमलपत्र की तरह। राजा जनक की तरह कर्मयोगी बनिए। अनासक्त रहिए। सर्वत्र आत्मीयता की दृष्टि से देखिए। अपनी महानता का अनुभव कीजिए और गर्व के साथ सिर ऊंचा उठाकर कहिए- सोहम, अर्थात वह मैं हूं।

आत्मज्ञान द्वारा आप इहलोक व परलोक को परिपूर्ण आनंदमय बना सकते हैं। मृत्यु फिर आपको दुख नहीं देगी। वरन एक खेल प्रतीत होगी। आप ऊंचे उठेंगे और महान उद्देश्य को प्राप्त कर पाएंगे। मृत्यु की तैयारी के लिए आज से ही आत्मा के विशुद्ध स्वरूप का चिंतन आरंभ कर देना चाहिए। अपनी महानता का ज्ञान होते ही माया-मोह के सारे बंधन टूटकर गिर पड़ेंगे।

बोध कथा

मानसिक संतोष में खुशी

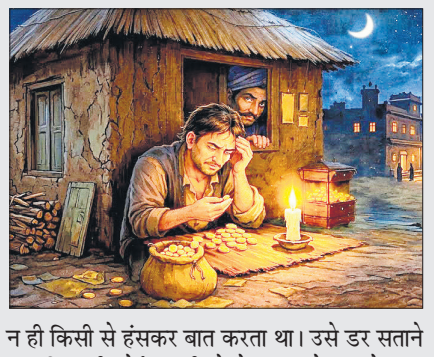

एक बार की बात है, एक बहुत ही अमीर व्यापारी अपने विशाल महल की खिड़की पर खड़ा था। वह बहुत चिंतित और उदास था, क्योंकि उसका व्यापार ठीक नहीं चल रहा था। तभी उसकी नजर खिड़की के ठीक नीचे सड़क के किनारे रहने वाले एक गरीब मोची पर पड़ी। वह मोची फटे-पुराने कपड़े पहने हुए था, लेकिन वह बहुत जोर-जोर से गाना गा रहा था और जूते सिलते समय उसके चेहरे पर गजब की मुस्कान थी। व्यापारी को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने सोचा, "मेरे पास इतना धन, महल और नौकर-चाकर हैं, फिर भी मैं परेशान हूं। इस आदमी के पास कुछ नहीं है, फिर भी यह इतना खुश कैसे है?"

व्यापारी ने मोची की खुशी का रहस्य जानने के लिए एक योजना बनाई। उसने चुपके से एक थैली में 100 सोने की मोहरें डालीं और रात के अंधेरे में मोची की झोपड़ी के बाहर रख दीं। अगली सुबह जब मोची को वह थैली मिली, तो उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। उसने कभी इतनी दौलत नहीं देखी थी। उसने मोहरें गिनीं कुल 99 थीं (व्यापारी ने जानबूझकर एक कम रखी थी)। मोची ने सोचा, "सिर्फ एक मोहर और मिल जाए, तो पूरे 100 हो जाएंगे।" अब मोची का व्यवहार पूरी तरह बदल गया। वह उस एक मोहर को कमाने के लालच में दिन-रात काम करने लगा। वह अब गाना नहीं गाता था, न ही किसी से हंसकर बात करता था। उसे डर सताने लगा कि कहीं कोई उसकी मोहरें चुरा न ले। वह देर रात तक जागता और हर समय तनाव में रहता।

कुछ दिनों बाद व्यापारी ने फिर खिड़की से देखा। मोची अब दुबला हो गया था, उसके चेहरे की मुस्कान गायब थी और वह हर पल चिड़चिड़ा रहता था। व्यापारी समझ गया कि मोची '99 के फेर' में फंस गया है। इस कथा से सार निकलता है कि हम अक्सर उन चीजों के पीछे भागते हैं, जो हमारे पास नहीं हैं (वह 100 वीं मोहर) और इस चक्कर में हम उन चीजों का आनंद लेना भूल जाते हैं, जो हमारे पास पहले से मौजूद हैं। खुशी बाहरी संपत्ति में नहीं, बल्कि मन के संतोष में होती है।

-प्रमोद श्रीवास्तव

शनिदेव का रहस्य

हिंदू मान्यताओं के अनुसार शनिदेव को कर्मफलदाता और न्याय के देवता माना जाता है। वे सूर्यदेव और संज्ञा देवी के पुत्र हैं। उनकी चाल मंद मानी जाती है और इसी कारण उनका प्रभाव भी लंबे समय तक रहता है। शनि की साढ़ेसाती और ढैया को लेकर लोगों में भय अवश्य रहता है, लेकिन उनके स्वरूप को समझें तो वे अनुशासन और न्याय के प्रतीक हैं। पौराणिक कथा के अनुसार, सूर्यदेव के तेज को सहन न कर पाने के कारण संज्ञा देवी ने अपनी प्रतिमूर्ति स्वर्णा को उनके स्थान पर छोड़ दिया। स्वर्णा ने संज्ञा की संतानों के प्रति भेदभाव किया। एक दिन क्रोध में आकर शनिदेव ने उन्हें मारने के लिए पैर उठाया, जिस पर स्वर्णा ने उन्हें श्राप दे दिया। बाद में सूर्यदेव ने उस श्राप को कम करते हुए कहा कि शनि अपंग तो नहीं होंगे, परंतु जीवनभर लंगड़ाकर चलेंगे। यही कारण है कि उनकी गति धीमी मानी जाती है।

एक अन्य कथा हनुमान जी से जुड़ी है। जब हनुमान जी प्रभु राम के ध्यान में लीन थे, तब शनिदेव ने उन्हें युद्ध के लिए ललकारा। हनुमान जी ने अपनी पूंछ से उन्हें बांध लिया और कष्ट दिया। अंतत: शनिदेव ने अपनी भूल स्वीकार की और वचन दिया कि वे राम और हनुमान भक्तों को कष्ट नहीं देंगे। हनुमान जी द्वारा दिए गए तेल से उनके घाव शांत हुए, तभी से शनिदेव को तेल चढ़ाने की परंपरा प्रचलित हो गई। इन कथाओं का सार यही है कि शनिदेव दंड के साथ-साथ सुधार के भी प्रतीक हैं। वे हमें सिखाते हैं कि क्रोध और अहंकार से बचकर, संयम और अच्छे कर्मों का पालन करें। सच्ची भक्ति और विनम्रता ही उनके प्रकोप से बचाकर जीवन में सुख और संतुलन प्रदान करती है।

मांगलिक योग या दोष

डॉ.विपिन शर्मा
ज्योतिषाचार्य

समाज ने 'मांगलिक' शब्द को डर से जोड़ दिया है। कहा जाता है कि मांगलिक व्यक्ति से शादी करने पर जीवनसाथी को खतरा होता है, पर ज्योतिष का गहरा सच इससे अलग है। मांगलिक होना कोई बीमारी नहीं, बल्कि मंगल ग्रह की तीव्र ऊर्जा का शरीर और मन में उतर आना है। मंगल अग्नि है। वही अग्नि जो लोहे को पिघलाती भी है और तलवार भी बनाती है। मांगलिक व्यक्ति के भीतर यही अग्नि ज्यादा होती है। इसलिए वे सामान्य लोगों से ज्यादा तेज, साहसी, भावुक और क्रियाशील होते हैं। वे जल्दी प्रतिक्रिया करते हैं, जल्दी गुस्सा भी होते हैं और जल्दी प्रेम भी करते हैं। यही कारण है कि उनके रिश्तों में तीव्रता अधिक होती है- चाहे वह लड़ाई हो या आकर्षण। यह समझना बहुत जरूरी है कि 'मांगलिक से मांगलिक की शादी' कोई अंधविश्वास नहीं, बल्कि ऊर्जा-संतुलन का सिद्धांत है। अगर एक व्यक्ति में मंगल की ऊर्जा बहुत ज्यादा है और दूसरा बहुत शांत, तो टकराव तय है। मानसिक, शारीरिक और यहां तक कि दांपत्य जीवन में भी असंतुलन बनता है। पर जब दो लोगों की मंगल-ऊर्जा बराबर होती है, तो वही तीव्रता आपसी समझ, आकर्षण और मजबूत रिश्ते में बदल जाती है।

रिश्तों पर अशुभ मंगल के मुख्य प्रभाव

- **क्रोध और अहंकार** : व्यक्ति गुस्सैल, अहंकारी और आक्रामक हो सकता है, जिससे रिश्तों में अनावश्यक बहस और टकराव होता है।
- **वैवाहिक जीवन में तनाव** : सप्तम भाव (विवाह भाव) में मंगल होने से वैवाहिक जीवन में मारपीट, झगड़े और अविश्वास की भावना पैदा होती है, जिससे तलाक का खतरा भी बढ़ सकता है।
- **ससुराल पक्ष से मतभेद** : ससुराल वालों के साथ संबंध खराब होते हैं और उनसे अनबन बनी रह सकती है।
- **भाई-बहनों से अनबन** : छोटे भाई-बहनों और अन्य रिश्तेदारों (चाचा, ताऊ) से रिश्ते बिगड़ते हैं, भाई के साथ धोखा मंगल को और खराब करता है।
- **अविश्वास और संदेह** : रिश्तों में एक-दूसरे पर शक करने की प्रवृत्ति बढ़ती है, जिससे दूरियां आती हैं।
- **शारीरिक समस्याएं** : रिश्तों में तनाव के कारण शारीरिक स्वास्थ्य पर भी बुरा असर पड़ सकता है।
- **अलगाव और तलाक** : गंभीर मामलों में, मंगल दोष रिश्ते टूटने का कारण बन सकता है, खासकर जब मुद्दों को सुलझाया न जाए।
- **कर्ज और मुकदमेबाजी** : अशुभ मंगल कर्ज और कानूनी मामलों में उलझा सकता है, जो रिश्तों को भी प्रभावित करता है।

मंगल शांति के लिए उपाय और आराधना

- मंगलवार को हनुमान जी की पूजा, हनुमान चालीसा या सुंदरकांड का पाठ करें।
- भगवान नरसिंह और कार्तिकेय की आराधना करें।

दान

लाल मसूर दाल, गुड़, सौंफ, गेहूं, तांबे के बर्तन, लाल वस्त्र, लाल कनेर के फूल दान करें। लाल कपड़े में मिश्री और सौंफ दान करना भी लाभकारी है।

अनिष्ठ मंगल का रिश्तों पर प्रभाव

अशुभ मंगल रिश्तों में क्रोध, आक्रामकता, अहंकार और असहमति बढ़ाता है, जिससे वैवाहिक जीवन में झगड़े, अविश्वास और अलगाव तक हो सकता है, खासकर ससुराल पक्ष से संबंध खराब होते हैं और भाई-बहनों से मनमुटाव रहता है, क्योंकि यह उग्रता और टकराव पैदा करता है, लेकिन उपाय से इसे शांत किया जा सकता है।

नकारात्मक प्रभाव को कम करने वाली स्थितियां

कुछ संयोजन मंगल दोष के नकारात्मक प्रभावों को खत्म करते हैं। ये संयोजन न केवल प्रभावों को बेअसर करेंगे, बल्कि आपको एक खुशहाल वैवाहिक जीवन भी देंगे।

- मुख्य रूप से यदि मंगल मेष, सिंह या कुंभ राशि में लग्न में स्थित हो, तो मंगल दोष के बुरे प्रभाव समाप्त हो जाते हैं। अत: इस स्थिति से मांगलिक दोष स्वत: ही समाप्त हो जाता है।
- जब मंगल अपनी राशि में या अपने मित्रों के घर में हो, तो मांगलिक दोष समाप्त हो जाता है।
- यदि मंगल दूसरे भाव में हो, लेकिन कन्या या मिथुन राशि में हो, तो मांगलिक दोष नहीं बनता।
- यदि मंगल 8 वें घर में धनु या मीन राशि में हो, तो मांगलिक दोष आंशिक होता है।
- यदि मंगल अपनी ही राशि अर्थात मेष या वृश्चिक में हो, तो प्रभाव कमजोर हो जाता है और मांगलिक दोष आंशिक ही होता है।
- यदि मंगल दूसरे भाव में मिथुन या कन्या राशि में हो, तो मांगलिक दोष नहीं होता।
- यदि मंगल 12 वें भाव में वृषभ या तुला राशि में हो, तो मांगलिक दोष कमजोर हो जाता है।
- यदि मंगल पर किसी शुभ ग्रह की दृष्टि हो, जिसके नैसर्गिक लाभकारी और सकारात्मक प्रभाव हों तथा जो पाप ग्रह जैसे बृहस्पति के विपरीत हो, तो मांगलिक दोष नहीं होता।
- यदि शुक्र लग्न में हो, तो मांगलिक दोष नहीं होता।
- यदि मंगल उच्च का हो, तो यह मंगल दोष को रद्द नहीं करता।
- यदि किसी जातक की जन्म कुंडली में शुक्र उच्च राशि अर्थात मीन राशि में, प्रथम, चतुर्थ, सप्तम भाव में हो, तो मांगलिक दोष नहीं होता।
- यदि लड़का और लड़की दोनों मांगलिक हों,तो मांगलिक दोष समाप्त हो जाता है।
- यदि शुभ बृहस्पति सप्तम भाव या सप्तम भाव के स्वामी को देख रहा हो, तो जातक का वैवाहिक जीवन काफी अच्छा रहता है।
- यदि शनि मंगल पर दृष्टि डाले या उसके साथ स्थित हो, तो मंगल दोष समाप्त हो जाता है, लेकिन इस स्थिति में मंगल सातवें घर में नहीं होना चाहिए।
- यदि नवमांश कुंडली में मंगल कमजोर हो, तो मंगल दोष कम हो जाता है।